THE RICH CULTURAL PAST OF INDIA : CONCERNS AND DEMYSTIFICATION OF REALITIES

भारत का समृद्ध सांस्कृतिक अतीत : चिंताएँ एवं वास्तविकताओं का रहस्योद्घाटन

National Seminar

on

The Rich Cultural Past of India : Concerns and Demystification of Realities

19-20 August, 2023

Organized By:

Department of Sociology,
Sardar Bhagat Singh Govt. P.G. College
Rudrapur (U.S.Nagar), Uttarakhand.
(Affiliated to Kumaun University, Nainital)

Sponsored By:

Indian Council of
Social Science Research

Indian Council of Social Science Research (ICSSR), New Delhi.

VIVEK
PRAKASHAN

Dr. Anchalesh Kumar

स्वच्छता की एक अभिनव संस्कृति

डॉ० राजेश कुमार सिंह *

भारतीय जनमानस के स्वच्छता के प्रति विचार और इन विचारों के सार्वजनिक और वैयक्तिक आमूर्तिकरण के भेद को समझना आसान नहीं है । अपने व्यक्तिगत जीवन में, अपनी चारदीवारी के अंदर, अपने दैनिक कार्यों को निपटाने में स्वच्छता के प्रति उसका अनुराग और समर्पण सदैव अनुकरणीय रहा है । लेकिन जब बात सार्वजनिक स्थलों पर साफ-सफाई की आती है, तो बिलकुल अलग तरीके का आचरण दिखाई देता है । अपने घर पर साफ-सफाई से रहने वाला व्यक्ति सार्वजनिक स्थल पर स्वच्छता को लेकर बहुत सहजता से इस तरह का व्यवहार करता है कि उसके सभ्य सुसंस्कृत नागरिक होने पर संदेह होने लगता है । सार्वजनिक स्थलों पर जगह-जगह फैली गंदगी सिर्फ कूड़ा-करकट के निस्तारण में सरकारी उपक्रमों की लापरवाही का ही परिणाम नहीं है, बल्कि यह हमारी उस आदत का भी परिणाम है जिसके चलते हम कभी भी, कहीं भी किसी भी प्रकार का कूड़ा फेंकते रहते हैं । अपने वैयक्तिक जीवन में हमारी आदत इसके ठीक विपरीत है । हम स्वच्छता के प्रति समर्पित हैं, घर को मंदिर का दर्ज़ा देते है, नित्य अपनी और अपने घर की साफ-सफाई करते हैं, घर में कूड़ा-करकट को बहुत व्यवस्थित तरीके से निपटाते हैं और घर के अंदर इसके विपरीत आचरण प्रदर्शित करने वाले सदस्यों को हतोत्साहित करते हैं । घर की साफ-सफाई को हम अपनी जिम्मेदारी मानते हैं, लेकिन घर से बाहर निकलते ही हमारा आचरण पूरी तरह से बदल जाता है ।

'निमबाई' सिंड्रोम (NIMBY Syndrome):

दरअसल इसके पीछे हमारी वह मानसिकता काम करती है जिसके लक्षणों को हम समाजशास्त्रीय शब्दावली में 'NIMBY Syndrome' के नाम से जानते हैं । Encyclopedia Britannica के अनुसार "**Not in My Backyard Phenomenon (NIMBY)**, also called **Nimby**, a colloquialism signifying one's opposition to the locating of something considered undesirable in one's neighborhood. The phrase seems to have appeared first in the mid-1970s. It was used in the context of the last major effort by electric utilities to construct nuclear-powered generating stations, especially those located in Seabrook, New Hampshire, and Midland, Michigan."[i]

---

*एसोसिएट प्रोफेसर-समाजशास्त्र विभाग, सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूद्रपुर (ऊधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड; Mobile No.945406501.

साधारण बोलचाल की भाषा में इसे किसी ऐसी वस्तु या गतिविधि के लिए प्रयुक्त किया जाता है, जिसे कोई व्यक्ति अपने आस-पास के लिए अवांछित मानता है। 1970 के दशक के मध्य में पहली बार प्रयुक्त हुआ यह वाक्यांश जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले तत्वों, वस्तुओं या गतिविधि के अपने आस-पास उपस्थिति का निषेध करता है। लोग मानते हैं कि कचरा बुरा है, स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, जीवन की गुणवत्ता का निषेध करता है - इसलिए अवांछित है। हमारे आस-पास, हमारे घर में नहीं होना चाहिए। हमारी चारदीवारी के बाहर हो तो हमें इससे कोई विशेष समस्या, कोई आपत्ति नहीं है। शायद इसीलिए घर से बाहर निकलते ही हमकुछ भी, कहीं भी बहुत स्वच्छंदता के साथ विसर्जित कर देते हैं। अपनी चारदीवारी के बाहर फैला गंदगी का साम्राज्य हमें क्षुब्ध करता है,पर उसका हमारी चारदीवारी के बाहर होना हमारे अंदर उससे दूर होने की आश्वस्ति भी पैदा करता है। यही कारण है कि उससे क्षुब्ध होते हुए भी हम उसमे निरंतर योगदान दे रहे हैं। उसके प्रति किसी तरह की जिम्मेदारी का बोध हमें नहीं होता। हम यह मान कर चलते हैं कि हमारी चारदीवारी के बाहर इकठ्ठा होने वाले कूड़े-कचरे के निपटान और समाधान की पहली और अंतिम ज़िम्मेदारी सिर्फ और सिर्फ सरकारी उपक्रमों की है।

सामूहिकता की संस्कृति का विलोपन

यहाँ पर यदि हम स्वच्छता के प्रति इस तरह के दोहरे मानदंडो पर गौर करें तो यह आदत से बढ़कर संस्कृति का मसला लगता है। समाज के विकास का पहिया कुछ इस गति से और दिशा में घूमा कि हम गाँव से शहर आ गए। उस गाँव से जिसे चार्ल्स मेटकॉफ ने कभी पूरी तरह से आत्मनिर्भर एक छोटे गणतंत्र की संज्ञा दी थी। बाद के वर्षों में हेनरी मेन और कार्ल मार्क्स ने भी मेटकॉफ से सहमति व्यक्त की थी।[ii] महात्मा गाँधी भारत के गांवों की इस आत्मनिर्भर प्रकृति से इतने अधिक अभिभूत थे कि उन्होंने बाद में इसके लिए एक व्यापक राजनीतिक कार्यक्रम की मांग की ताकि गांवों को उनकी परंपरागत आत्मनिर्भरता दुबारा प्रदान की जा सके। इन गाँवों में रहने वाले लोगों का अपने परिवेश के साथ बहुत निकट का सम्बंध था। इन सम्बंधों की सबसे बड़ी विशेषता पारस्परिकता और अन्योन्याश्रिता की थी।परंपरागत रूप से भारतीय गांव में रहने वाला व्यक्ति अपनी और अपने आस-पास की साफ-सफाई करने का आदी था। गांव में उसके घर मिट्टी या गोबर से लिपे रहते थे और आस-पास के की सड़कें और गली-गलियारे सब साफ सुथरे होते थे। इस गाँवो में कही कोई सफाई कर्मचारी नही होता था। अपने घर-चौबारे के साथ-साथ सामुदायिक रूप से इस्तेमाल होने वाली गलियों, सड़कों की साफ-सफाई की ज़िम्मेदारी हमारी होती थी। हमारी पूरी जीवन शैली इस तरह से मानव श्रम और स्वावलम्बन पर आधारित थी कि हम अपने घर के अलावा आस-पास के गली-गलियारे और सड़कें तक साफ करते थे। यह किसी एक व्यक्ति का मामला नहीं था अपितु सम्पूर्ण ग्रामीण समुदाय की जीवन शैली का अभिन्न अंग था, उसकी संस्कृति का अनिवार्य हिस्सा था। व्यक्तिगत अधिवास के साथ-साथ सार्वजनिक स्थलों को भी स्वच्छ रखने की संस्कृति का अनुसरण गाँव का प्रत्येक नागरिक करता था। परन्तु नगरीकरण की प्रक्रिया के चलते गाँव से नगर में आकर बसने के बाद परंपरागत व्यवहार में परिवर्तन आया।

जब सार्वजनिक स्थलों की सफाई के लिए नगरीय निकायों की संलग्नता से हमारा साक्षात्कार हुआ तो हमने अपने आस-पास की सफाई से मुँह फेर लिया। हमने यह मान लिया कि दरअसल यह हमारी ज़िम्मेदारी नहीं है । स्वच्छता के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व की संस्कृति का धीरे-धीरे ह्रास होने लगा । गाँव की सामूहिकता का स्थान नगर की आत्मकेन्द्रित जीवन शैली ने ले लिया । नगरीकरण की प्रक्रिया ने हमें सिर्फ ग्रामीण जीवन से ही नहीं दूर किया बल्कि एक ऐसी जीवन शैली का अभ्यस्त बना दिया जिसमें अपने आस-पास के परिवेश से कोई सम्बन्ध रखे बिना भी आसानी से गुजर-बसर हो जा रही थी । हम स्वयं किसी वृहद संरचना की एक इकाई के रूप में अपने निमित निर्धारित भूमिका का संपादन कर शेष उत्तरदायित्वों से स्वयं को मुक्त समझते हैं । इसलिए घर से बाहर निकलकर यहाँ-वहाँ गंदगी फैलाते समय कोई अपराधबोध नहीं पैदा होता । यह एक नए तरीके की संस्कृति है, जिसका विकास समाज के ताने-बाने से सामूहिकता के तंतुओं के लगातार कमजोर होते जाने से हुआ है ।

देश और घर के प्रति अलग-अलग दृष्टि

सामूहिकता की संस्कृति का ह्रास समाज के साथ हमारे सरोकारों को निरंतर कमजोर करता जाता है । यही कारण है कि अपने घर और समाज को लेकर हमारे अलग-अलग मानदंड हैं । अपने वैयक्तिक जीवन में स्वच्छता के प्रति आग्रही भारतीय लोग अपने घरों को सफाई के माध्यम से पवित्र बनाते हैं । यह सामान्य धारणा है कि यदि हमारा घर साफ है तो पवित्र है, गन्दा है तो अपवित्र है । लेकिन देश के लिए, समाज के लिए हमारा दृष्टिकोण बदल जाता है ।घर से बाहर निकलने पर अपने ही पैदा किये हुए कचरे से हम बचकर निकल जाते हैं । वो कचरा हमें बहुत परेशान नहीं करता । पवित्रता और अपवित्रता को लेकर हमारे आग्रह यहाँ सर नहीं उठाते । हम संतुष्ट रहते हैं कि हमारा घर तो इससे लाख दर्जे बेहतर है,पवित्र है । दरअसल पवित्रता और अपवित्रता की यह धारणा निरपेक्ष नहीं है । एक का अस्तित्व सदैव दूसरे पर निर्भर है । यह एक सापेक्षिक धारणा है । देश और समाज के प्रति यदि घर के जैसी दृष्टि हो जायेगी तो अपने घर की पवित्रता का बोध जाता रहेगा । इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम अपने घर को पवित्र प्रमाणित करने के लिए जानबूझकर अपने देश, अपने परिवेश को गन्दा करते हैं । लेकिन अपने परिवेश की तुलना में अपने घर का स्वच्छ, पवित्र होना-हमारे अंदर गौरवबोध का सृजन करता है । इसके विपरीत घर की तुलना में परिवेश का गन्दा,अपवित्र होना हमारे अंदर हीनता का बोध नहीं पैदा करता । यानि कि अपने देश, समाज या परिवेश और अपने घर के प्रति हमारा अलग-अलग दृष्टिकोण है । दरअसल यही समस्या का मूल है ।

स्वच्छाग्रह-स्वच्छता की एक अभिनव संस्कृति

विभिन्न धर्मों, जातियों, वर्गों, प्रजातियों, भाषाओं और क्षेत्रों में बंटे हुए भारत को किसी एक सूत्र में बाँधना एक बहुत कठिन कार्य है । लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सरकार का स्वच्छ भारत अभियान इन सभी विभिन्नताओं को एकता के सूत्र में बांधने वाला सिद्ध हो सकता है । नरेन्द्र मोदी का स्वच्छाग्रह आन्दोलन अपनी प्रकृति और उद्देश्यों की उदात्तता के चलते सभी धर्मों, जातियों, वर्गों, प्रजातियों, भाषाओं और क्षेत्रोंके लोगों को अपने साथ जोड़ने में सफल हुआ है ।

इसने स्वच्छता की एक अभिनव संस्कृति के विकास की संभावना को बल दिया है । भारतीय जनमानस की स्वच्छता के सम्बंध में परंपरागत धारणा और देश-काल के साथ उसके सरोकारों की रूढ़ प्रकृति में बदलाव के संकेत मिलने शुरू हो गए हैं । स्वच्छता के प्रति यदि हम वैश्विक आग्रहों को देखेंगे तो पाएंगे कि जहाँ अमेरिकी जगत के लिए स्वच्छता स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ मसला है,जापान के लिये एक जीवन शैली है, वहीं यह भारत के लिए नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 'स्वच्छाग्रह'के रूप में एक अभिनव सांस्कृतिक आन्दोलन है । हम सभी को अपने-अपने प्रयासों से स्वच्छता की इस अभिनव संस्कृति के विकास में योगदान देना चाहिए ।

संदर्भ सूची

[i]Peter D. Kinder(2016), Not in My Backyard Phenomenon, Retrieved from https://www.britannica.com/topic/Not-in-My-Backyard-Phenomenon

[ii]Srinivas M.N. & Shah A.M.(1960), The Myth of Self-Sufficiency Of the Indian Village, The Economic Weekly, September 10, 1960. pp 1375-1378.